तुम्हारा धर्म क्या है ?

— गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०

हिन्दुओं में एक विचित्र बात है जो और जातियों में नहीं पाई जाती। यदि इनसे कोई पूछे "तुम्हारा धर्म क्या है ?" तो इनकी समझ में नहीं आता कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दें। कोई मुसलमान जल्दी से कह देगा "मैं मुसलमान हूं" कोई ईसाई झट उत्तर देगा, "मैं ईसाई हूं" परन्तु हिन्दू विचारे को पता ही नहीं कि मैं क्या उत्तर दूं ?

इसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दुओं को कोई बतलाता ही नहीं कि उनका धर्म क्या है और उनकी धर्म पुस्तक क्या है ? शिक्षित हिन्दू तो धर्म से बेजार हैं। वह तो सीधा-सीधा यही उत्तर देने को तैयार हो जाता है कि मेरा धर्म कुछ नहीं; परन्तु संसार उसको चैन लेने नहीं देता। लोग कहते हैं कि "क्या तुम्हारा कोई धर्म नहीं ? कुछ तो अवश्य होगा।" तब वह मजबूर होकर कह उठता है कि "मैं हिन्दू हूं।" यदि उससे फिर पूछा जाय कि क्या हिन्दू किसी जाति का नाम है या धर्म का ? तो उस पर फिर विपत्ति सी-आ टूटती है। उत्तर क्या दे ? क्या भेद है जाति में और धर्म में ? यदि किसी अंगरेज से पूछो कि "तुम्हारी जाति क्या है ? वह कहेगा "अंगरेज"। यदि उससे पूछो "तुम्हारा धर्म क्या है ?" तो वह कहेगा "ईसाई", यहां हिन्दू अपनी जाति को ही धर्म बता देता है क्योंकि उसको आरम्भ काल से ही अपने धर्म का पता नहीं बताया गया। यदि किसी हिन्दुस्तानी मुसलमान से पूछो कि "तुम्हारा धर्म क्या है ?" तो वह कहेगा "मुसलमानी या इस्लाम", यदि उससे पूछो कि तुम्हारी जाति क्या है ?" तो इसका भी वह यही उत्तर देगा "मुसलमान।" इसका कारण यह है कि मुसलमान को केवल उसका धर्म बताया गया है, जाति बताई ही नहीं गई। हिन्दू जाति जानता है, धर्म नहीं जानता। मुसलमान धर्म जानता है जाति नहीं जानता। मुसलमान जाति के प्रश्न पर धर्म का नाम लेता है; हिन्दू धर्म के प्रश्न पर जाति का नाम लेता है। हिन्दुस्तान के हिन्दू में धर्म के लिये" प्रेम नहीं। दूसरे देशों का हाल विपरीत है, वह धर्म और जाति में पहचान कर सकते हैं और धर्म तथा जाति के प्रश्नों पर अलग-अलग विचार कर सकते हैं।

यदि कोई हिन्दू कहता है कि मेरा धर्म हिन्दू है और उससे आप हिन्दू का लक्षण पूछ बैठते हैं तो उसको बड़ी कठिनाई होती है। पचासों बार बड़े बड़े विद्वान और महात पुरुषों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित हुआ है कि "हिन्दू धर्म" के क्या लक्षण हैं और पुष्कल वाद-विवाद के पश्चात भी आज तक कोई संतोषजनक उत्तर नहीं

जा सका। यदि उससे पूछा जाय कि हिन्दू धर्म के मूल ग्रन्थ का नाम लो तो उसे कुछ भी पता नहीं लगेगा। कभी वह तुलसीकृत रामायण को धर्म पुस्तक बतायेगा कभी गीता को, कभी तुकाराम की वाणी को, कभी किसी अन्य सन्त के वचनों को। यदि उससे पूछा जाय कि तुलसीदास किस ग्रन्थ को अपना धर्म ग्रन्थ मानते थे या तुका राम का धर्म ग्रन्थ क्या था, या गीता के लिखने वाले व्यास जी अपने धर्म का मूला धार क्या मानते थे ? तो उसको चुप ही होना पड़ता है।

यदि उससे पूछा जाय कि तुम्हारे धर्म के अङ्ग क्या हैं ? तब उनकी और आफत आता है। धर्म के अङ्ग क्या होते हैं जिसने जैसा चाहा उस प्रकार से पूजा कर ली, या न कर ली। किसी ने वृक्ष पूज लिया, किसी ने सूर्य की उपासना कर ली, किसी ने किसी देवता या मन्दिर में जाकर सिर झुका दिया। या किसी ने कुछ न किया। यदि किसी से कहो कि इन सबका समन्वय कर दो तो समन्वय भी नहीं हो सकता। इसका पारमार्थिक परिणाम क्या होगा यह तो ईश्वर जाने या वह सोचें जो पारमार्थिक चिन्तन में निमग्न रहते हैं परन्तु व्यावहारिक और सांसारिक परिणाम यह है कि जिस प्रकार एक राज्य के अभाव में अराजकता, शासन-शून्यता और शासन-भेद भाव के कारण कलह रहता है इसी प्रकार मतान्तरों की भिन्नता, कलह, उपद्रव,अशान्ति और अधार्मिकता के कारण लौकिक जीवन में भी शान्ति नहीं मिलती। और जब हिन्दुओं का अन्य धर्मावलम्बियों के साथ सामना पड़ता है तब तो इनकी नानी ही मर जाती है और हिन्दुओं के नेताओं को यह नहीं सूझता कि किस प्रकार जाति को सुसंगठित करके विधर्मियों के आक्रमण से रक्षा की जाय। पिछले कुछ दिनों में हिन्दुओं के सभी नेता मिल कर या अलग-अलग इस बात की कोशिश करते रहे हैं कि मुसलमानों के धार्मिक तथा नैतिक आक्रमणों से हिन्दुओं की कैसे रक्षा करें ? परन्तु अभी तक किंचित् सफलता भी प्राप्त नहीं हुई। एक नेता से एक बार पूछा गया कि हिन्दू कौन है ? उसने बहुत सोच विचार कर यह उत्तर दिया कि हिन्दुस्तान का रहने वाला हिन्दू है। यह केवल भौगोलिक उत्तर था जो दो कौड़ी का भी मूल्य नहीं रखता। इस उत्तर से न तो धार्मिक उलझनें ठीक होती हैं, न सामाजिक और न राजनैतिक ही। इस आधार पर हिन्दुस्तान की प्रत्येक नदी में रहने वाली मछली वा प्रत्येक तालाब का मेंढक भी हिन्दू है। जिस शब्द से आचार-विचार या जीवनोद्देश्य या जाति कर्त्तव्य का पता ही न लगता उससे लाभ ही क्या ? यह उत्तर लोगों को भूल भुलैय्यों में तो डाल सकते परन्तु कठिन ग्रन्थियों को सुलझा नहीं सकते।

फिर आप पूछेंगे कि तुम क्या उत्तर देते हो ? सुनिये ! ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इसका बहुत अच्छा उत्तर दिया है। यदि कोई पूछे कि तुम कौन हो तो कहना चाहिए "मैं आर्य्य हूं।" और यदि कोई पूछे कि तुम्हारा धर्म क्या है? तो कहना चाहिये कि "मेरा धर्म वैदिक है क्योंकि मेरे धर्म का मूलाधार वेद है।"

कुछ लोग पूछेंगे कि ऐसा उत्तर क्यों देते हो ? हिन्दू लोग तो वेदों को जानते नहीं। इस विषय में हमको यह कहना है कि लोग वेदों को इसलिए नहीं जानते कि उन्हें यह बताया नहीं गया। यदि लोगों से कहा जाता कि तुम्हारे धर्म ग्रन्थ वेद हैं तो अवश्य ही वेदों को देखना, पढ़ना या उनकी कथा सुनना चाहते। जब से ऋषि दयानन्द ने लोगों को बताया है कि तुम्हारा धर्म वेद है उसी दिन से वेदों के विषय

गहरी चर्चा चल पड़ी है। वेदों का प्रकाशन होने लगा है। वेदों से निकाल निकाल कर छोटे छोटे वेदों के गुटके या वेद मन्त्रों की व्याख्यायें लोगों के सामने आने लगी है। कम से कम आर्य्य समाज के सभासद जो अपने को स्वामी दयानन्द का अनुयायी समझते हैं। वेदों से बहुत कुछ परिचित हैं। ग्रामों के अशिक्षित आर्य्य सभासद भी वेदों के नाम और दस पांच मन्त्र जानते हैं। इसका मोटा सा परिणाम यह है कि जब कभी धार्मिक प्रश्न उपस्थित होता है तो सब आर्य एक हो जाते हैं। जितना संगठन आर्य्य-सामाजिकों में है उतना अन्यत्र कहीं नहीं। यदि हिन्दू लोग अपना लौकिक या पार-लौकिक कल्याण चाहें तो आर्य्य का अनुकरण करें।

कुछ लोग कहेंगे कि हम वेदों को मानते ही नहीं तो अपना धर्म वैदिक क्यों बतावें? मैं उनसे कहता हूं कि यह आपकी भूल है। आप जिस ग्रन्थ को अपना धर्म ग्रन्थ मानते हैं उन्होंने भी वेदों को ही धर्म का मूलाधार माना है। जिनको आप धर्म ग्रन्थ मान रहे हैं वह तो वेदों की व्याख्या रूप हैं। इनको धार्मिक पुस्तक माना जाता है क्योंकि वे वेदों के अनुकूल हैं। कालिदास ने कहा है कि—

श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत, (रघुवंश सर्ग २) अर्थात् स्मृति सदा श्रुति के पीछे चलती है। धार्मिक ग्रन्थ दो प्रकार के होते हैं एक तो मूल अर्थात स्वतः प्रमाण, दूसरे व्याख्या रूप या स्मृति रूप जो परतः प्रमाण हैं। मूल ग्रंथों के अनुकूल होने से उनका प्रमाण है। उदाहरण के लिये इस्लाम धर्म का मूल ग्रन्थ "कुरान" ही हैं। अन्य बहुत से धार्मिक ग्रन्थ मुसलमान विद्वानों ने लिखें हैं। वे धर्म के मूल ग्रन्थ नहीं कहे जाते। मूलग्रन्थ 'कुरान' ही है! इसी प्रकार ईसाईयों का मूल-ग्रन्थ "बाईविल" है। परन्तु अन्य ईसाई संतों ने बहुत से ग्रन्थ लिखे हैं जो व्याख्या या स्मृति रूप समझे जाते हैं। इसी प्रकार 'वेद' धर्म का मूलग्रन्थ है। हम यहां कुछ प्रमाण देते है :—

(१) वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद् विदाम् ॥

(मनु० २।६)

धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥

(मनु०२ ।१३)

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥

(मनु० २। १६८)

मनुस्मृति में लिखा है कि वेद ही धर्म का मूल है और जो वेद के जानने वाले हैं उनकी स्मृति और शील भी धर्म है। अर्थात वेद तो मूल ग्रन्थ हैं और अन्य पुस्तकें शाखा मात्र ।(मनु० २। ६)

जो धर्म के मर्म को जानना चाहते हैं उनके लिये वेद ही प्रमाण है। (मनु० २। १३)

जो ब्राह्मण वेद को न पढ़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है वह जीते हुये ही अपने कुल सहित शूद्र हो जाता है।

(मनु० २। १६८)

(२) वेद प्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः ॥

(श्रीमद्भागवत स्कन्द ६, अ० १ श्लो० ४०)

(श्रीमद् भागवत ६।१।४०

नास्ति वेदात् परं शास्त्रं नास्ति मातः परोगुरः ॥

(अत्रिस्मृति १।१४८

अत्रिस्मृति का वचन है कि वेद से बड़ा शास्त्र कोई नहीं और माता से ब[ड़ा] कोई गुरु नहीं।

(४) वेदमनूच्याचार्योऽन्ते वासिन मनूशास्ति ॥

(तैत्तिरीयोपनिषत् ७।११

आचार्य वेद को पढ़कर शिष्य को शिक्षा देता है। यह तैत्तिरीय उपनिषद् [का] वचन है।

(५) वेद दूषयिता यश्च वेद विक्रयकश्च यः।
आगम्य गामीयश्च स्यात ते यान्तिं सवनं द्विजः ॥

जो वेद को अपमान करते और वेद की बिक्री करते हैं तथा जो बदचलन है [वे] नरक को पहुंचते हैं।

(६) धर्म नाशे विनष्टः स्याद् वर्णाचारोऽति वर्तितः।
अतो वेद प्रदिष्टेन मार्गेणं गच्छतां शुभम् ॥

देवी भागवत का कथन है धर्म के नाश होने से वर्ण धर्म नष्ट हो जाता है इसलिये वेद के बताये मार्ग पर चलना शुभ है (देवी भागवत ११।१८।४

(७) श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममुपतिष्ठेत् प्रयत्नतः ॥

श्रुति (वेद) और स्मृति में कहे हुये धर्म का यत्न पूर्वक पालन करे। (मत्स[्य] पुराण ५ २।१२)

(८) ते मोह मत्यवः सर्वे तथा वेदविनिन्दकाः ॥

(मार्कण्डेय पुराण १०।५८

मार्कण्डेय पुराण कहता है कि वेद के निन्दक मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

(९) स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तियो वेदनिन्दकः।

(भविष्यत पुराण १०।५८

जो वेद का निन्दक है वह नास्तिक है और भले पुरुष उसको अपने में [न] मिलावे। (भविष्य पुराण)

(१०) वेद निन्दा प्रकुर्वन्ति ब्रह्मा चारस्य कुत्सनम्।
महापातक मेवादि ज्ञातव्य ज्ञान पंडितैः ॥

(पद्म पुराण द्वितीय भूमि खण्ड ६७।४

जो वेदों की निन्दा करते हैं वे बड़े पापी हैं। (पद्मपुराण)

(११) यस्य यद् विहितं कर्म्मं वेदे शास्त्र च वैदिकैः।
तस्य तेन समाचारः सदाचारो न चेतरः ॥

(वायु संहिता उत्तरार्द्ध अ० १२।१५७

वायु पुराण में लिखा है कि वेद में जिसका जो कर्तव्य बताया है वह सदाचार है अन्य नहीं।

(१२) यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यं व्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तुं मिहार्हसि ॥

(गीता १६-२३,२४)

गीता में लिखा है कि जो मनुष्य वेद की विधि को छोड़, काम के वशीभूत होकर कार्य करता है उसको न सुख मिलता है न परलोक में सद्गति होती है। इसलिये हे अर्जुन ! तेरे कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य के निर्णय के लिये वेद ही प्रमाण है इसलिये तू वेदानुकूल कार्य कर।

नोट —यहां शास्त्र का अर्थ वेद है। अन्य कुछ नहीं। गीता भी वेदों को ही प्रमाण मानती है। हमने यहां इतने उद्धारण देकर दिखा दिया कि वेदों का बहुत बड़ा महत्व है। फिर भी यह प्रश्न हो सकता है। कि वेदों में ऐसी क्या बात है कि उनको अपना धर्म ग्रन्थ माना जाय।

सब से पहली बात यह है कि वेद में एक ईश्वर का प्रतिपादन किया है। वेद को हिन्दू (आर्य) लोग ईश्वरीय ज्ञान मानते आये हैं। परन्तु जो ऐसा नहीं मानते वह भी इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वेद संसार में सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। उस ग्रन्थ में एक ईश्वर-वाद का प्रतिपादन बताता है कि धार्मिक विषय में अब तक वद से उन्नतशील भाव कोई बताया नहीं गया। इसी प्रकार जीवन की अन्य घटनाओं जैसे एक पति भाव, एक पत्नी भाव, सामाजिक संगठन तथा अन्य उपयोगी बातों में जो उपदेश वेद का है उससे अच्छा किसी देश या किसी जाति के सुधारक ने अब तक नहीं दिया। इसीलिये ऋषि लोग वेद को सूर्य के समान प्राचीन, सूर्य के समान प्रकाशक और सूर्य के समान नित्य उपयोगी समझते रहे। ईश्वर क्या है ? ईश्वरीय ज्ञान क्या है ? ईश्वर अपना ज्ञान मनुष्य को कैसे देता है ? यह सब ऐसे जटिल प्रश्न हैं कि इन पर मत-भेद हो सकता है। और इनका समाधान यहां नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि इन प्रश्नों को अनुपयोगी या अनावश्यक समझ कर छोड़ भी दिया जाय तो भी आपको वेद में उन उलझनों का समाधान मिलेगा जिनको आप सांसारिक दृष्टि से लाभ का समझते हैं। यह लोगों की भूल है कि वेद केवल हवन में आहुति डालने या मन्त्र जपने की पुस्तक है। इस धारणा के कारण बहुत से बुद्धिमान और तर्क-प्रिय लोग वेदों को पण्डों, मुल्लाओं या पादरियों की पुस्तक कह कर त्याग देते हैं। उनको मालूम नहीं कि वेद के भीतर क्या कोष भरा पड़ा है।

वेद में एक विशेषता यह है कि साम्प्रदायिक झगड़ों से पाक है। उनमें किसी मनुष्य विशेष की पूजा नहीं बताई गई। आज कल जितने मत मतान्तर के झगड़े होते हैं उसका कारण इतना मौलिक सिद्धांत नहीं हैं जितना मनुष्य पूजा है। हर एक ईश्वर का प्रतिनिधि अथवा एजेन्ट बनना चाहता है। और हर एक मत के अनुयायी उसी मनुष्य को आगे रखकर चलते हैं। इसलिये झगड़े होते हैं। ईश्वर के नाम पर उतनी लड़ाईयां नहीं हुईं जितनी मुहम्मद साहब या ईसा मसीह के नाम पर हुईं। ईश्वर प्रार्थना के विषय में इतना कलह नहीं हुआ जितना मुहम्मद साहेब या ईसामसीह की कब्रगों को अपनाने के लिये हुआ। महात्मा बुद्ध के मौलिक सिद्धान्तों, सत्य, अहिंसा आदि के विषय में इतने मत-भेद नहीं जितना महात्मा बुद्ध की लाश को लेने या उनके दांत, या अन्य स्मरणीय अङ्ग की पूजा के विषय में हुआ ?

गायत्री मंत्र के ऊपर भारत वर्ष में इतना झगड़ा नहीं जितने 'ओ३म् शिवाय नमः' या 'ओ३म विष्णवे नमः' पर शैवों और वैष्णवों या कृष्ण पूजक और राम पूजकों में हुआ। इसका केवल एक कारण था अर्थात् मनुष्य पूजा, या मनुष्य-पूजा के झगड़े केवल एक ईश्वर पूजा से दूर हो सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को उपदेश दिया है कि मनुष्य को मत पूजो, ईश्वर को पूजो। यदि वह चाहते तो "ओ३म दयानन्दाय नमः" का मन्त्र चला देते। परन्तु ऐसा करना वह महापाप समझते थे। उन्होंने अपनी समाधि तक बनाने की आज्ञा नहीं दी कि कहीं ईश्वर के स्थान में मेरी पूजा आरम्भ न हो जाय. हिन्दुओं के परस्पर झगड़े जो पुराणों की विभिन्नता उत्पन्न करने वाली शिक्षा से उत्पन्न हुये हैं केवल वैदिक धर्म से ही दूर हो सकते हैं।

वेद ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के चातुर्वर्ण्य धर्म को जन्म-परक न मान कर केवल गुणाकर्मानुसार बताया है। इसके कारण आपस के जाति सम्बन्धी झगड़े और भी दूर हो जाते हैं। यह आवश्यक नहीं कि ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही हो। और न यह आवश्यक है कि चमार का लड़का चमार हो। ईश्वर की दृष्टि में सब मनुष्य बराबर हैं और समाज की दृष्टि में उन सब का एक-सा अधिकार होना चाहिये। तथा सब को उन्नत होने के लिये समान सुविधायें मिलनी चाहिये। यह उपदेश वेद ने दिया है। यों तो संसार के सभी झगड़े मिटाने और सर्वत्र भ्रातृ भाव फैलाने के लिये वेद से बढ़ कर कोई और पुस्तक नहीं परन्तु संसार भर को समझाने में देर लगेगी। हिन्दुओं का तो वेदों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है इसलिये हिन्दुओं को तो वैदिक धर्म को अपना लेना चाहिये। यही एक उपाय है हिन्दुओं की तङ्ग साम्प्रदायिकता दूर करने और उनको सुसंगठित करने का। जब हिन्दू जाति एक हो जायगी और एक स्वर से वैदिक धर्म का प्रचार करेगी तो मनुष्य मात्र में भ्रातृत्व उत्पन्न हो सकेगा और परस्पर के वैर छूट जायेंगे।

कुछ स्वार्थी हिन्दुओं ने उड़ा रक्खा है कि वेद अवश्य माननीय ग्रन्थ थे परन्तु केवल सतयुग के लिये। आज कल कलियुग है। कलियुग में वेदों आवश्यकता नहीं। यह बात नितान्त मिथ्या है। वेदों में कहीं नहीं लिखा कि वेद कलियुग के लिये नहीं सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग तो एक दूसरे के पश्चात् आते ही रहते हैं। परन्तु इनके कारण धर्म वा धर्म पुस्तक नहीं बदल जाते। सत्य सनातन वैदिक धर्म का अर्थ ही यह है कि वेद सनातन हैं अर्थात् वे सब युगों और सब देशों के लिये उपयोगी तथा आवश्यक हैं। जिस प्रकार सूर्य प्रत्येक युग में बदलता नहीं किन्तु सृष्टि की से चला आता है। इसी प्रकार वेद बदलते नहीं, न धर्म बदलता है ईश्वर सनातन है। उसका ज्ञान भी सनातन है और उस ज्ञान का प्रतिपादक वेद भी सनातन है। वेद में स्वयं कहा है :—

सनातन नमेनमाहुरुताद्यस्यात् पुनर्णवः ॥
अहो रात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः ॥

[अथर्व १० । ८ । २३]

अर्थात सनातन धर्म वह है जो आज भी ताजा रहता है जैसे दिन और रात एक दूसरे के में नित्य आते रहते है। दिन और रात प्रवाह से अनादि हैं स्वरूप से आदि हैं। इसी प्रकार यद्यपि मनुष्य नित्य बदलता रहता है तथापि उसका धर्म एक ही रहता है। कौन कह सकता है कि सतयुग में दो और दो चार होते हैं, कलियुग

में उन्नति करते करते पांच हो गये या अवनति करते, करते तीन रह गये। झूठ बोलना, चोरी करना, हिंसा करना सतयुग में भी गर्हित कर्म थे और आज कलियुग में भी वैसे ही हैं। ईश्वर की उपासना, सत्य, अहिंसा आदि सतयुग में धर्म समझे

जाते और कलियुग में भी उसी प्रकार धर्म समझेजाने चाहियें। इसलिये जो लोग वेदों को केवल सतयुग का धर्म मानते हैं कलियुग का नहीं, यह उनकी भूल है। कुछ लोग समझते हैं कि, एक ईश्वर-वाद सतयुग के लिये था कलियुग के लिये नहीं। कलियुग में तो अनेक ईश्वरवाद का विधान है। परन्तु वह भी ठीक नहीं। ईश्वर अखण्ड एक रस और नित्य है। वह सदा एक ही रहेगा। और उसी की पूजा करना धर्म हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि वेद में गो-वध का विधान है। वह केवल सतयुग के लिये है। कलियुग में यज्ञों में गौओं का वध करके आहुति देना वर्जित है। यह भ्रम भी वेदों का अर्थ न समझने के कारण हैं। वेदों में गो-वध या अज-वध या अविवध का विधान ही नहीं वहां तो यज्ञ को "अध्वर" कहा है अर्थात् यज्ञ में कभी हिंसा करनी ही नहीं चाहिये। धर्म के पथ से हट कर जब लोग वाम मार्गी हो गये और यज्ञों में पशुओं को मार मार कर डालने लगे उस समय लोगों ने कुछ पुस्तकों में मिलावट कर दी। परन्तु यह मत वेदों का न था। वेदों ने हिंसा की सदा निन्दा की है चाहे वह यज्ञ में हो या यज्ञ के बाहर। वेदों की शिक्षा के दो मूल मन्त्र यह है :—

(१) **मित्रस्य या चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।**

(यजु० ३०-१८)

अर्थात सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिये।

(२) **अन्यो अन्यं अभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥**

[अथ० ३३-७१[

अर्थात् एक दूसरे के साथ इस प्रकार बर्तात्र करना चाहिये जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के साथ किया करती है। अर्थात उन सबको अत्यन्त प्रेम और स्नेह के साथ रहना चाहिये। वेदों के विषय में बहुत से लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनायें कर रखी हैं। इसका कारण यह है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना छोड़ दिया और लोग उनकी शिक्षा को भूल गये ;

कुछ ब्राह्मण लोग यह समझते हैं कि वेद केवल ब्राह्मणों के लिये हैं। शूद्र उनको पढ़ेंगे या सुनेंगे तो वेद अपवित्र हो जायंगे। ऐसे पंडितों की बुद्धि पर हंसी आती हैं। विद्या मूर्खों की मूर्खता, और अशुद्धों की अशुद्धता दूर करने के लिये है न कि विद्या स्वयं अपवित्र हो सके। सूर्य का प्रकाश गंदे स्थलों को साफ तो करता है परन्तु स्वयं अपवित्र नहीं हो जाता। इसी प्रकार वेद और गायत्री मन्त्र अपवित्र नहीं हो जाते। वेदों में लिखा है:—

यथेमां वाचं कल्याणी, मा वदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यता॑ँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ॥

[यजुर्वेद २६।२]

ईश्वर कहता है कि जैसे मैं तुमको अपनी कल्याणकारक वेद वाणी को देता हूं उसी प्रकार तुम भी ब्रह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों, शूद्रों तथा नीच से नीच मनुष्य में वेद का प्रचार करो जिससे सभी का कल्याण हो।

आजकल दुनियां के लोग वेदों से इसलिये उदासीन हैं कि वे समझते हैं कि वेद हिन्दुओं के हैं और हिन्दू हैं दास, परतन्त्र और साम्प्रदायिक। इसलिये वेद की भी यही शिक्षा रही होगा लोग भी क्या करें ? हिन्दुओं की वर्तमान अवस्था और पर-स्पर कलह ने उनके प्राचीन गौरव, अति प्राचीन सत्य सनातन धर्म तथा वेदों के विषय में भी लोगों में घृणा उत्पन्न कर दी इसमें हिन्दुओं का ही दोष है। इसका प्रायश्चित्त हर एक हिन्दू को करना है। वैदिक धर्म का अवलम्बन ही यह प्रायश्चित है। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म का निचोड़ इन सूत्रों में किया है। [१]एक ईश्वर को माना [२] वेद को ही धर्म का मूल पुस्तक मानों [३] जाति पांति देश, रंग आदि की तंग सीमाओं को तोड़ कर संसार भर में भ्रातृ-भाव उत्पन्न करो [४]लोक और परलोक के बीच दीवार खड़ी मत करो। लेकिन उन्नति की अवहेलना करने से परलोक नहीं मिल सकता और न परलोक भूल कर लोक में शान्ति उत्पन्न हो सकती है यह है सच्चा स्वरूप वैदिक धर्म का। और यही धर्म मनुष्य मात्र का धर्म हो सकता है।
